

रविवार 15 सितंबर, 2019

विषय — पदार्थ

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 78 : 19

"क्या ईश्वर जंगल में मेज लगा सकता है?"

उत्तरदायी अध्ययन: I इतिहास 16 : 8-12, 23, 24

- 8 यहोवा का धन्यवाद करो, कि प्रार्थना करो; देश देश में उसके कामों का प्रचार करो।
9 उसका गीत गाओ, उसका भजन करो, उसके सब आश्चर्य-कर्मों का ध्यान करो।
10 उसका पवित्र नाम घमंड पर; भगवान के खोजियों का हृदय आनन्दित हो।
11 यहोवा और उसकी सामर्थ्य की खोज करो; उसके दर्शन के लिए लगातार खोज करो।
12 उसके किए गए आश्चर्यकर्म, उसके चमत्कार और न्याय स्मरण करो।
23 हे समस्त पृथ्वी के लोगो यहोवा का गीत गाओ। प्रतिदिन उसके किए हुए उद्धार का शुभ समाचार सुनाते रहो।
24 अन्यजातियों में उसकी महिमा का, और देश देश के लोगों में उसके आश्चर्य-कर्मों का वर्णन करो।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. व्यवस्थाविवरण 28 : 12

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

12 यहोवा तेरे लिये अपने आकाशरूपी उत्तम भण्डार को खोल कर तेरी भूमि पर समय पर मेंह बरसाया करेगा, और तेरे सारे कामों पर आशीष देगा; और तू बहुतेरी जातियों को उधार देगा, परन्तु किसी से तुझे उधार लेना न पड़ेगा।

2. रोमियो 11: 33, 36 (से 1st.)

33 आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!
36 क्योंकि उस की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिये सब कुछ है: उस की महिमा युगानुयुग होती रहे॥

3. भजन संहिता 68: 17 (से:), 19 (से 1st.)

17 परमेश्वर के रथ बीस हजार, वरन हजारों हजार हैं;
19 धन्य है प्रभु, जो प्रति दिन हमारा बोझ उठाता है; वही हमारा उद्धारकर्ता ईश्वर है।

4. निर्गमन 16 : 11-18

11 तब यहोवा ने मूसा से कहा,
12 इस्राएलियों का बुडबुडाना मैं ने सुना है; उन से कह दे, कि गोधूलि के समय तुम मांस खाओगे और भोर को तुम रोटी से तृप्त हो जाओगे; और तुम यह जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।
13 और ऐसा हुआ कि सांझ को बटेरें आकर सारी छावनी पर बैठ गईं; और भोर को छावनी के चारों ओर ओस पड़ी।
14 और जब ओस सूख गई तो वे क्या देखते हैं, कि जंगल की भूमि पर छोटे छोटे छिलके छोटाई में पाले के किनकों के समान पड़े हैं।
15 यह देखकर इस्राएली, जो न जानते थे कि यह क्या वस्तु है, सो आपस में कहने लगे यह तो मन्ना है। तब मूसा ने उन से कहा, यह तो वही भोजन वस्तु है जिसे यहोवा तुम्हें खाने के लिये देता है।
16 जो आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है, कि तुम उस में से अपने अपने खाने के योग्य बटोरा करना, अर्थात् अपने अपने प्राणियों की गिनती के अनुसार, प्रति मनुष्य के पीछे एक एक ओमेर बटोरना; जिसके डेरे में जितने हों वह उन्हीं भर के लिये बटोरा करे।
17 और इस्राएलियों ने वैसा ही किया; और किसी ने अधिक, और किसी ने थोड़ा बटोर लिया।

- 18 और जब उन्होंने उसको ओमेर से नापा, तब जिसके पास अधिक था उसके कुछ अधिक न रह गया, और जिसके पास थोड़ा था उसको कुछ घटी न हुई; क्योंकि एक एक मनुष्य ने अपने खाने के योग्य ही बटोर लिया था।

5. निर्गमन 17 : 1-7

- 1 फिर इस्राएलियों की सारी मण्डली सीन नाम जंगल से निकल चली, और यहोवा के आज्ञानुसार कूच करके रपीदीम में अपने डेरे खड़े किए; और वहां उन लोगों को पीने का पानी न मिला।
- 2 इसलिये वे मूसा से वादविवाद करके कहने लगे, कि हमें पीने का पानी दे। मूसा ने उन से कहा, तुम मुझ से क्यों वादविवाद करते हो? और यहोवा की परीक्षा क्यों करते हो?
- 3 फिर वहां लोगों को पानी की प्यास लगी तब वे यह कहकर मूसा पर बुड़बुड़ाने लगे, कि तू हमें लड़के बालों और पशुओं समेत प्यासों मार डालने के लिये मिस्र से क्यों ले आया है?
- 4 तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी, और कहा, इन लोगों से मैं क्या करूं? ये सब मुझे पत्थरवाह करने को तैयार हैं।
- 5 यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएल के वृद्ध लोगों में से कुछ को अपने साथ ले ले; और जिस लाठी से तू ने नील नदी पर मारा था, उसे अपने हाथ में ले कर लोगों के आगे बढ़ चल।
- 6 देख मैं तेरे आगे चलकर होरेब पहाड़ की एक चट्टान पर खड़ा रहूंगा; और तू उस चट्टान पर मारना, तब उस में से पानी निकलेगा जिससे ये लोग पीएं। तब मूसा ने इस्राएल के वृद्ध लोगों के देखते वैसा ही किया।
- 7 और मूसा ने उस स्थान का नाम मस्सा और मरीबा रखा, क्योंकि इस्राएलियों ने वहां वादविवाद किया था, और यहोवा की परीक्षा यह कहकर की, कि क्या यहोवा हमारे बीच है वा नहीं?

6. यशायाह 58 : 11

- 11 और यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा, और काल के समय तुझे तृप्त और तेरी हड्डियों को हरी भरी करेगा; और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता।

7. मत्ती 4 : 23

- 23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

8. मत्ती 5 : 2

2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,

9. मत्ती 6 : 26, 28 (विचार करें), 29

- 26 आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं; तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन को खिलाता है; क्या तुम उन से अधिक मूल्य नहीं रखते।
- 28 जंगली सोसनों पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं, वे न तो परिश्रम करते हैं, न कातते हैं।
- 29 तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी, अपने सारे विभव में उन में से किसी के समान वस्त्र पहिने हुए न था।

10. यूहन्ना 21 : 4 (जब)-6

- 4 भोर होते ही यीशु किनारे पर खड़ा हुआ; तौभी चेलों ने न पहचाना कि यह यीशु है।
- 5 तब यीशु ने उन से कहा, हे बाल को, क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है? उन्होंने उत्तर दिया कि नहीं।
- 6 उस ने उन से कहा, नाव की दाहनी ओर जाल डालो, तो पाओगे, तब उन्होंने जाल डाला, और अब मछलियों की बहुतायत के कारण उसे खींच न सके।

11. नीतिवचन 8 : 14, 18-21

- 14 उत्तम युक्ति, और खरी बुद्धि मेरी ही है, मैं तो समझ हूं, और पराक्रम भी मेरा है।
- 18 धन और प्रतिष्ठा मेरे पास है, वरन ठहरने वाला धन और धर्म भी हैं।
- 19 मेरा फल चोखे सोने से, वरन कुन्दन से भी उत्तम है, और मेरी उपज उत्तम चान्दी से अच्छी है।
- 20 मैं धर्म की बाट में, और न्याय की डगरों के बीच में चलती हूं,
- 21 जिस से मैं अपने प्रेमियों को परमार्थ के भागी करूं, और उनके भण्डारों को भर दूं।

12. फिलिप्पियों 4 : 19 (मेरा)

- 19 ... मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 330 : 11 (परमेश्वर)-12

ईश्वर अनंत है, एकमात्र जीवन, पदार्थ, आत्मा या आत्मा, ब्रह्मांड की एकमात्र बुद्धि, जिसमें मनुष्य भी शामिल है।

2. 468 : 16-24

सवाल। — पदार्थ क्या है?

उत्तर। — पदार्थ वह है जो अनादि है और कलह और क्षय से असमर्थ है। सत्य, जीवन और प्रेम पदार्थ हैं, क्योंकि इब्रानियों में इस शब्द का उपयोग होता है: "विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।" आत्मा, मन, आत्मा या ईश्वर का पर्यायवाची एकमात्र वास्तविक पदार्थ है। व्यक्ति सहित आध्यात्मिक ब्रह्मांड, एक यौगिक विचार है, वह आत्मा के दिव्य पदार्थ को दर्शाता है।

3. 349 : 31-5

क्रिस्टियन साइंस में, पदार्थ को आत्मा के रूप में समझा जाता है, जबकि क्रिश्चियन साइंस के विरोधियों का मानना है कि सामग्री भौतिक है। वे किसी चीज़ के बारे में और लगभग एक ही चीज़ के बारे में विचार करते हैं, और वे उन चीज़ों के बारे में सोचते हैं जो आत्मा से संबंधित हैं और कुछ भी नहीं, या ये दैनिक अनुभव से बहुत दूर हैं। क्रिश्चियन साइंस इसके विपरीत दृश्य लेता है।

4. 335 : 12-15

आत्मा एकमात्र पदार्थ है, अदृश्य और अविभाज्य अनंत भगवान। आध्यात्मिक और शाश्वत चीज़ें पर्याप्त हैं। चीज़ें सामग्री और अस्थायी असाध्य हैं।

5. 507 : 11-8

उत्पत्ति 1:11 फिर भगवान ने कहा, पृथ्वी से हरी घास, और बीज वाले छोटे छोटे पेड़, और फलदाई वृक्ष भी जिनके बीज उन्हीं में एक एक की जाति के अनुसार होते हैं पृथ्वी पर उगते हैं, और वैसा ही हो गया।

आत्मा का ब्रह्मांड ईश्वरीय सिद्धांत या जीवन की रचनात्मक शक्ति को दर्शाता है, जो मन के बहुआयामी रूपों को पुनः पेश करता है और यौगिक विचार मनुष्य के गुणन को नियंत्रित करता है। पेड़ और जड़ी बूटी, किसी भी तरह की अपनी स्वयं की प्रचार शक्ति के कारण फल नहीं देते हैं, लेकिन क्योंकि वे मन को प्रतिबिंबित करते हैं जिसमें सभी शामिल हैं। एक भौतिक दुनिया एक नश्वर मन और मनुष्य को एक निर्माता बनाती है। वैज्ञानिक ईश्वरीय रचना अमर मन और ईश्वर द्वारा निर्मित ब्रह्मांड की घोषणा करती है।

अनंत मन मानसिक अणु से अनंत तक सभी को बनाता और नियंत्रित करता है। सभी का यह दिव्य सिद्धांत उनकी रचना के दौरान विज्ञान और कला, और मनुष्य और ब्रह्मांड की अमरता को व्यक्त करता है। सृजन हमेशा दिखाई दे रहा है, और हमेशा अपने अटूट स्रोत की प्रकृति से प्रकट होता रहना चाहिए। नश्वर भाव इस प्रकार प्रकट होता है और विचार सामग्री कहता है। इस प्रकार, गलत अर्थ में, दिव्य विचार मानव या भौतिक विश्वास के स्तर तक गिर जाता है, जिसे नश्वर मनुष्य कहा जाता है। लेकिन बीज अपने आप में है, केवल दिव्य मन ही सब कुछ है और सभी को पुनः उत्पन्न करता है — जैसा कि मन गुणक है, और मन का अनंत विचार, मनुष्य और ब्रह्मांड, उत्पाद है। एक विचार, एक बीज, या एक फूल की एकमात्र बुद्धि या पदार्थ ईश्वर है, जो इसका निर्माता है। मन सभी की आत्मा है। मन ही जीवन, सत्य और प्रेम है जो सभी को नियंत्रित करता है।

6. 60 : 29-31

आत्मा के पास आत्मा को प्राप्त करने के लिए अनंत संसाधन हैं, और खुशी अधिक आसानी से प्राप्त की जाएगी और हमारे रखने में अधिक सुरक्षित होगी, अगर आत्मा में मांग की जाए।

7. 206 : 15-18

मनुष्य के साथ भगवान के वैज्ञानिक संबंध में, हम पाते हैं कि जो कुछ भी एक को आशीर्वाद देता है, वह सभी को आशीर्वाद देता है, जैसा कि यीशु ने आत्मा को दिखाया, भौतिक नहीं, आपूर्ति का स्रोत होने के नाते, रोटियों और मछलियों के साथ।

8. 507 : 3-6

आत्मा प्रत्येक वस्तु को विधिवत् खिलाती है और कपड़े देती है, जैसा कि आध्यात्मिक निर्माण की पंक्ति में दिखाई देता है, इस प्रकार भगवान के पितात्व और मातृत्व को कोमलता से व्यक्त करके।

9. 2 : 26 (करेगा)-30

क्या हम खुले फव्वारे में और अधिक की याचना करेंगे, जिसे हम स्वीकार करने की तुलना में अधिक डाल रहे हैं? अनिच्छुक इच्छा हमें सभी अस्तित्व और आशीर्वाद के स्रोत के करीब लाती है।

10. 530 : 5-12

दिव्य विज्ञान में, मनुष्य ईश्वर के द्वारा कायम है, होने का दिव्य सिद्धांत। परमेश्वर के आदेश पर पृथ्वी, मनुष्य के उपयोग के लिए भोजन लाती है। यह जानकर, यीशु ने एक बार कहा था, "से कहता हूं, कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे?" — अपने निर्माता के विशेषाधिकार पर नहीं मानते हुए, लेकिन सभी के पिता और माता को पहचान कर, जो मनुष्य को खिलाने और कपड़े पहनने में सक्षम है, जैसे वह गेंदे के साथ करता है।

11. 442 : 22-29

क्राइस्ट, ट्रुथ, मॉर्टल्स को अस्थायी भोजन और कपड़े देता है जब तक कि सामग्री गायब नहीं हो जाती, जो आदर्श के साथ बदल जाती है, और जब तक आदमी को कपड़े नहीं पहनाए जाते हैं और आध्यात्मिक रूप से नहीं खिलाया जाता है। संत पॉल कहते हैं, "डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ:" ईश ने कहा, "हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे।" यह सच्चाई क्रिश्चियन साइंस है।

12. 367 : 30-32

क्योंकि सत्य अनंत है, त्रुटि को कुछ भी नहीं के रूप में जाना जाना चाहिए। क्योंकि सत्य अच्छाई में सर्वशक्तिमान है, त्रुटि, सत्य के विपरीत, कोई शक्ति नहीं है।

13. 454 : 4-9

अपने छात्रों को सत्य की सर्वशक्तिमानता सिखाएं, जो त्रुटि की नपुंसकता को दर्शाता है। एक अंश में भी, परमात्मा की समझ से सारी शक्ति भय को नष्ट कर देती है, और यह सच्चे मार्ग में पैर रखता है, — वह मार्ग जो बिना हाथों के बने घर की ओर जाता है "आकाश में अनन्त।"

14. 578 : 5-18

[दिव्य प्रेम] मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।

[प्रेम] मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है; [प्रेम] मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है;

[प्रेम] मेरे जी में जी ले आता है। धर्म के मार्गों में [प्रेम] अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।

चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा, क्योंकि [प्रेम] मेरे साथ रहता है;

[प्रेम का] सोंटे और [प्रेम का] लाठी से मुझे शान्ति मिलती है॥

[प्रेम] मेरे सताने वालों के साम्हने मेरे लिये मेज बिछाता है; [प्रेम] ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमण्ड रहा है।
निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी; और मैं [प्रेम] के [चेतना] धाम में वास करूंगा ॥

15. 494 : 10-14

ईश्वरीय प्रेम हमेशा से मिला है और हमेशा हर मानवीय आवश्यकता को पूरा करेगा। यह कल्पना करना ठीक नहीं है कि यीशु ने दिव्य शक्ति का चयन केवल संख्या के लिए या सीमित समय के लिए ठीक करने के लिए किया, क्योंकि सभी मानव जाति के लिए और सभी समयों में, दिव्य प्रेम सभी अच्छे की आपूर्ति करता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6